वैदिक गऊमाँ एवं आधुनिक गाय

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

E-mail : gomaata@gmail.com
Website : www.panchgavya.org
www.facebook.com/maharisivagbhatta

अ.ब. राजीव भाई दीक्षित

वैदिक काल के गऊमाँ के चित्र में 33 कोटी देव हैं। इसका अर्थ है कि गऊमाँ के शरीर में 33 वास्तविक देव हैं। उन वास्तविक देवों को गऊमाँ के शरीर में उन्हीं स्थानों पर स्थापित किया गया है जिन - जिन अंगों में उन देवों के वास हैं। इस विषय को समझने की दृष्टि से देवों के चित्र के स्थान पर आधुनिक गऊमाँ के शरीर में उन्हीं देवों के आण्विक संरचना को दर्शाया गया है। जिसे देखकर इस विषय को आसानी के साथ समझा जा सकता है। जहां - जहां पर जिन - जिन आण्विक संरचना के चित्र दर्शाये गए हैं वहां -वहां उन तत्वों का वास / निर्माण गऊमाँ के शरीर में होता है। ये सारे तत्व मनुष्य के शरीर में भी पाए जाते हैं। इसीलिए गऊमाँ के सभी गव्य अपने आप में अमृत हैं।

मुद्रक : कलाकृति, जयपुर, 9829055861

चित्र संख्या 113 वर्ष 2015

गऊमाँ से संपूर्ण योग

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

शरीर में ऊर्जा चक्रों का गव्यों के साथ संबंध

www.panchgavya.org

शरीर में ऊर्जा चक्रों की भौतिक क्रियाएं।

आज्ञा चक्र
1 मिनट में 360 चित्र खींचने वाला कैमरा (तृतीय नेत्र)

सहस्त्रार चक्र
सौरमंडल के निर्माण से अंत तक की घटना का ज्ञान संग्रहित रखने वाल हार्डडिस्क रूपि पीयूश ग्रंथी।

विशुद्धि चक्र
यहां पर विचारों का संपादन होता है। अर्थात् जो भविष्य की जरुरत का नहीं है, उनका क्षय होता है।

हृदय चक्र
यहां पर संपादित विचारों का क्रियान्वयन होता है। अर्थात् जो उचित है उसे करने के लिए बुद्धि और साहस की प्राप्ति होती है।

नाभी चक्र
यहां पर किया गया कार्य पचता है। अर्थात् पूण्य कार्य कर भूल जाने की प्रेरणा मिलती है।

स्वाधिष्ठान चक्र
यहां पर सभी पूण्य कार्य संग्रह होते हैं और जब पूण्य कार्य से घड़ा भर जाता है। तब वह मूलाधार चक्र की और प्रस्थान करता है।

मूलाधार चक्र
इसी चक्र के माध्यम से हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है। अर्थात् हमारे शुक्ष्म शरीर का सूर्य नारायण में विलय हो जाता है। जन्म और मृत्यु से मुक्ति मिल जाती है।

।।गावो सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।।
।।यतो गावस्ततो वयम्।।

पंचगव्य गुरुकुलम् (पंजी.)
भारतीय पौराणिक तकनीकी ज्ञान को समर्पित गुरुकुलीय विश्वविद्यालय

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

© पंचगव्य गुरुकुलम्

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961
चित्र संख्या 114 वर्ष 2016

12 अंगो की रचना और क्रिया

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

E-mail : gomaata@gmail.com
Website : www.panchgavya.org
www.facebook.com/maharisivagbhatta

अ.ब. राजीव भाई दीक्षित

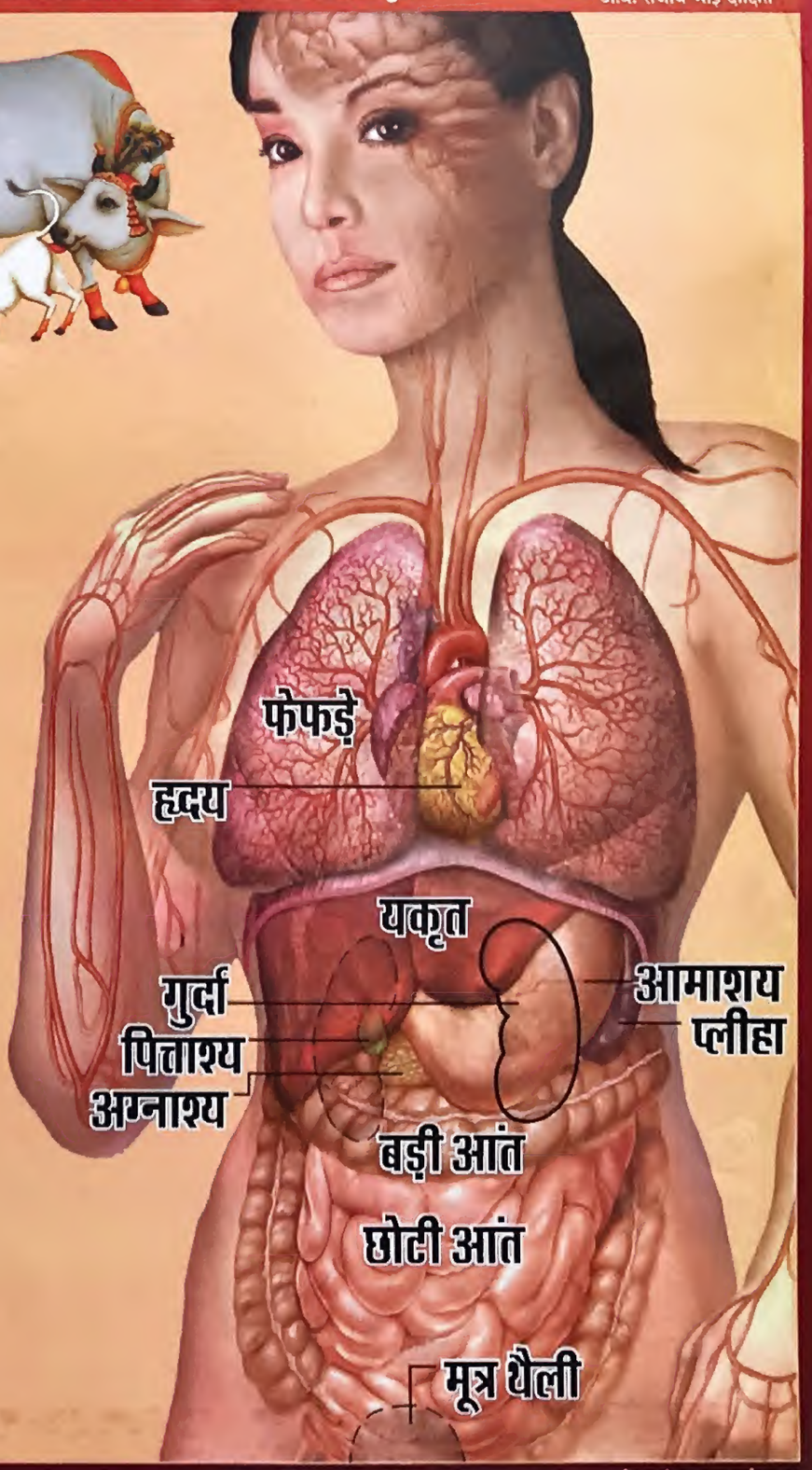

www.panchgavya.org

पंचगव्य गुरुकुलम्

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 112 वर्ष 2015

घृतं प्रास्य विशुद्ध्यति

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

नया घी	भोजन, तर्पण, परिश्रम, बलहीनता, पांडु, कमला तथा नेत्र रोगों में अमृत जैसा।
पुराना घी	त्रिदोष नाशक, मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, मिर्गी एवं मोतियाबिंद दूर करने में सक्षम।

www.panchgavya.org

गौघृत से यज्ञ करने से ऑक्सीजन बनती है।

यज्ञ में गौघृत के साथ चावल की आहुती देने से ईथीलीन ऑक्साइड, प्रोपीलीन ऑक्साइड और फारमैल्डीहाइड गैसें उत्पन्न होती है।

प्रोपीलीन आक्साइड वर्षा कराने में सहायक होती है।

ईथीलीन आक्साइड और फारमैल्डीहाइड का उपयोग ऑपरेशन कक्ष को जीवाणु रहित रखने में किया जाता है।

पृथ्वी पर कुछ अमृत है तो गौघृत

नाभि विकार

गाय के गरम घी में एक चुटकी हल्दी मिलाकर रुई के फाहे पर रखें और गुनगुना रहने पर नाभी पर बांध दें। नाभि विकार समाप्त हो जाता है।

गौघृत के सेवन से कॉलेस्ट्राल नहीं बढ़ता क्योंकि इसमें हाईडेंसिटी लिपोप्रोटीन होता है।

अतः इसके सेवन से हृदय पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है बल्कि हृदय बलिष्ठ होता है।

रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के शोध के अनुसार गाय के घी में मनुष्य शरीर में पहुंचे रेडियोधर्मी कणों का प्रभाव नष्ट करने की असीम शक्ति है।

घी नष्य के रूप में प्रयोग करें तो मस्तिष्क के सभी रोग मिट जाते हैं। जैसे सर दर्द, माईग्रेन, अनिद्रा, स्मरणशक्ति कम होना, सर्दी-जुकाम आदि कफ के सभी 21 रोग मिट जाते हैं।

गौघृत नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निप्रदीपक, त्रिदोष नाशक, बलवर्धक, आयुवर्धक, रसायन, सुगंधयुक्त, मधुर, शीतल, सुंदर और उत्तम होता है।

वैज्ञानिकों का मानना हैं कि गौमूत्र से हाईड्रोजन सबसे शुद्ध रूप में प्राप्त हो सकती है जो कि भविष्य का ईधन है और बिना प्रदूषण के है। इसी के साथ वे यह भी स्वीकार करते है कि अगर विश्व को कोई यह हाईड्रोजन दे सकता है तो वह भारत राष्ट्र की गाय ही है।

© पंचगव्य गुरुकुलम्

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

40/-

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 115 वर्ष 2016

तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

अ.व. राजीव भाई दीक्षित

दही में पायें जाने वाले अनगिनत बैक्टेरिया शरीर में गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल-डिसऑर्डर्स, डायरिया, कब्ज, बाउल सिंड्रोम तथा फूड पॉयजनिंग नहीं होने देते हैं।

www.panchgavya.org

जो भोरहि मठा पियत है, जीरा नमक मिलाय।
बल बुद्धि तीसै बढ़त है, सबै रोग जरि जाय।।

दूध-दही तो भाजी,
और सब दगाबाजी।

ऋषि घाघ - मड्डरी

आंवले के चूर्ण के साथ दही का सेवन करने से शरीर के सभी दोष मिट जाते हैं।

घी के साथ दही के सेवन से कफ बढ़ता है लेकिन वात्त व पित्त शांत होता हैं।

दही का सेवन वर्षा, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं में नहीं करना चाहिए।

दही में पाया जाने वाला एसिडोफिल्स कॉलन-कैंसर रोकने में मदद करता है।

नियमित रूप से दही का सेवन करने से शीत एवं संक्रामक रोग नहीं होते है।

दही से हमारे शरीर को भरपुर कैल्सियम, प्रोटीन, जिंक, राइबोफलेबिन तथा विटामिन बी-12 मिलता है। नियमित रूप में दही का सेवन करते रहने से हमारे शरीर को रोगों से लड़ने की क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ती है।

शीत ऋतु में मट्ठा, ताक या दही का प्रयोग काला नमक, जीरा व हींग मिलाकर करना चाहिए।

तक्र का पान करने वाला व्यक्ति सोते से जाग उठता है, दुबले शरीर में बिजली सी उर्जा आ जाती है, पांव में पहिए जैसी चलने की शक्ति आ जाती है।

मौर बनाने की विधि

दही में पांच गुना पानी मिलाकर अच्छी तरह मथने के बाद जो द्रव्य बनता है उसे मोर कहते है। मोर में सेंधा या काला नमक मिलाकर सेवन करने से वायु एवं पित्त दोनों दोष ठीक होते है मोर वायु नाशक है और पेट की अग्नि को प्रक्षिप्त करता है। मोर का स्वभाव शीतल होता है।

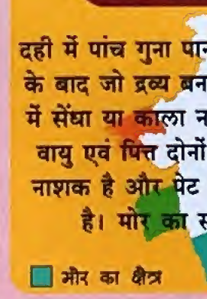

मौर का क्षेत्र

तक्र/मझिगा बनाने की विधि

दही में तीन गुना पानी मिलाकर अच्छी तरह से मथ कर मक्खन निकालने के बाद जो बचता है उसे तक्र कहते है। तक्र शरीर में जमें मल को बाहर निकालकर वीर्य बनाने का काम करता है। कफ नाशक है।

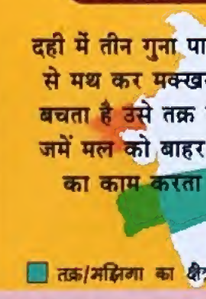

तक्र/मझिगा का क्षेत्र

छाछ बनाने की विधि

दही में दो गुना पानी मिलाकर अच्छी तरह से मथ कर मक्खन निकालने के बाद जो बचता है उसे छाछ कहते है। छाछ शरीर में जमें मल को बाहर निकालकर वीर्य बनाने का काम करता है। कफ नाशक है।

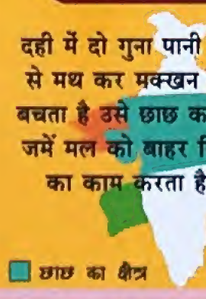

छाछ का क्षेत्र

मट्ठा बनाने की विधि

दही में सममात्रा में पानी मिलाकर अच्छी तरह से मथ कर थोड़ा मक्खन निकालने के बाद जो अंश बचना है उसे मट्ठा कहते हैं। मट्ठा वात्त पित्त दोनों का परम शत्रु है।

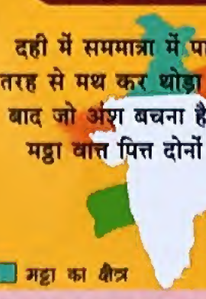

मट्ठा का क्षेत्र

© पंचगव्य गुरुकुलम्

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

40/-

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 118 वर्ष 2016

अमृतं क्षीर भोजनम्

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

www.panchgavya.org

रोज सवेरे जल पीएं, भोजन के संग छाछ।
दूध पीए फिर रात को, रोग न आवे पास।।

गाय का दूध श्रम से उत्पन्न थकान का नाश करने वाला अमृतमय रस है।

आयुर्वेद में दूध को 'सर्वोषधीसार' कहा गया है अर्थात् सभी औषधियों का सार (सत्) है दूध। गाय का दूध संपूर्ण खाद्य पदार्थ है, इसमें ७५ प्रतिशत प्रोटीन होता है, दूध में मौजूद वसा (फेट) सर्वश्रेष्ठ पदार्थ है।

शरीर में दूध से यदि अग्नि बढ़ाना हो तो दूध में घृत मिलाकर पीयें और शरीर में जल बढ़ाना हो तो पानी में दूध मिलाकर पीना चाहिए।

गाय के दूध के कण सूक्ष्म और सुपाच्य होते हैं। अतः वह को शक्ति प्रदान करते हैं। गाय के दूध में केराटीन आँखों की ज्योति बढ़ाता है। चरक सूत्र स्थान 1/18 के द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। गाय के दूध में आठ प्रतिशत मिनरल्स (100 आई.यू.), विटामिन ए और विटामिन बी, दूध-रसायन, पथ्य, बलवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, (वात, पित्त, कफ) नाशक है।

मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियों में पहुंच कर मस्तिष्क (विटामिन-ए) नाम का पीला पदार्थ रहता है जो अनुसार गाय का दूध जीवन शक्ति प्रदान करने वाले प्रोटीन, 8 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 0.7 प्रतिशत सी, डी एवं ई होता है। निघण्टु के अनुसार गाय का बुद्धिवर्धक, आयुप्रद, पुरुषत्वकारक तथा त्रिदोष

नेत्र की ज्योति वृद्धि एवं विभिन्न नेत्र रोगों को दूर करने के लिए धारोष्ण गौदुग्ध सर्वोत्तम औषध है।

गाय के दूध की विशेषताएं

गाय का दूध

'आयुवर्द्धक'	'अक्षि-ज्योति'	'मेध्य'	'हृदय'	'वीर्यवान'	'बल्य'	'रसोत्तम'
आयु बढ़ाने वाला	आंखों की रोशनी बढ़ाने वाला	मस्तिष्क की मेधा शक्ति बढ़ाने वाला	हृदय को बल प्रदान करने वाला	वीर्य में शुक्र वृद्धि करने वाला	बल प्रदान करने वाला	समस्त रसों में श्रेष्ठ है।

© पंचगव्य गुरुकुलम्

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

40/-

चित्र संख्या 119 वर्ष 2016

गोमय वस्ते लक्ष्मी

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

गोबर में लक्ष्मी का निवास है।

आईए! इसका वैज्ञानिक आधार पर जानें।

www.panchgavya.org

गाय के गोबर का लाभ

- गाय के गोबर का रस शरीर के सुक्ष्म छेदों को खोलकर पसीने के माध्यम में चर्म रोग के कारणों को बाहर निकालता है।
- गाय के गोबर का रस प्रसुति (Delivery) के लिए अमृत तुल्य है, इसके उपयोग से प्रसुति सामान्य (Normal) हो जाती है और प्रसुति के लिए ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- गाय के ताजे गोबर से स्थान विशेष पर लेपन से टी. बी. (क्षय रोग) तथा मलेरिया के कीटाणु तत्काल मर जाते है।
- गाय का गोबर हमारी त्वचा के दाद, एक्जिमा और घाव को सबसे जल्दी ठीक करता है।
- गाय का गोबर वाले भवन में प्राणवायु बहुत अधिक हाती है। जिसे हम अपने शरीर में प्राणवायु की पूर्ति के लिए उपयोग कर सकते हैं। 10 लीटर पानी में 25 ग्राम भस्म मिलाकर छोड़ दे। थोड़ी देर के बाद निथार कर सेवन करें।
- एक गाय के गोबर एवं गौमूत्र से हमें प्रतिदिन 5 एकड़ खेत के लिए प्रर्याप्त खाद और कीट खदेड़क मिलता है।
- एक गाय के गोबर से हमें प्रतिदिन 0.75 घनमीटर बॉयोगैस और 500 वॉट से ज्यादा बिजली का उत्पादन होता है।

गाय के गोबर में 'नो प्रोसेस लॉस'

ताजा गोबर में 23% प्राणवायु है, लेकिन यही गोबर जब धूप में सूख कर कण्डा बनता है, तब इसमे 27% प्राणवायु होता है। इसी कण्डे को जब जलाकर कोयला बनाते हैं तब इसमे 30% प्राणवायु होता है। इसी कोयले को फिर से जलाकर भस्म बना देने पर 46.6% प्राणवायु होता हैं और जब भस्म को दूबारा जला कर विशुद्ध भस्म बनाते हैं। तब इसमे 60% तक प्राणवायु आ जाता है। जबकि मॉडन साईंस कहता है कि किसी भी वस्तु को प्रोसेस करने से लॉस उसमें होता है।

गोबर का विविध तरह के उत्पाद बनाने में उपयोग

- औषधीय उपयोग
- विद्युत निर्माण में उपयोग
- गोबर युक्त डिस्टेंपर का निर्माण
- गोबर से ईंट का निर्माण
- गोबर गैस बनाने में उपयोग
- कृषि-खाद निर्माण में उपयोग
- गोबर से टाईल्स का निर्माण
- सौंदर्य प्रसाधन बनाने में

गाय के गोबर के रस में निर्गुण्डी, काली मिट्टी और हरजोड़ मिलाकर पकाकर बाँधने से किसी भी प्रकार के वात्त रोग से होने वाले दर्द एवं सुजन में लाभ मिलता है।

© पंचगव्य गुरुकुलम्

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 116 वर्ष 2016

।। गौमूत्र धनवंतरी ।।

पंचगव्य गुरुकुलम्, कांचीपुरम, तमिलनाडु - 631 604

E-mail : gomaata@gmail.com
www.facebook.com/maharisivagbhatta
Ph. : 044-27 29 0442

''गौमूत्र धनवंतरी'' अर्थात् गौमूत्र में स्वयं भगवान धनवंतरी निवास करते हैं।

इस बात का वैज्ञानिक आधार यह है कि मनुष्य शरीर में पाएं जाने वाले सभी ज्ञात तत्व गौमूत्र में पाएं जाते हैं एवं इन तत्वों के अलावा भी तत्व इसमें पाएं जाते हैं जिनका उल्लेख हमारे प्राचीन वैज्ञानिक ग्रंथों में वर्णित है। मनुष्य शरीर के लिए आवश्यक सभी तत्वों की उपस्थिति से ही गौमूत्र सभी बिमारियों में लाभकारी है।

ऋषि सुश्रुत

मिट्टी की हांडी में हरे बांस की नली से गउ मूत्र को वाष्पीकृत करते हुए।

गौमुत्र से कैंसर, हृदयरोग, रक्तचाप, दमा, मधुमेह, चर्मरोग, किडनी, मोटापा, स्त्रीरोग, आदि जैसे असाध्य रोगों को भी ठीक करने में पूर्ण सफलता मिली है।

गौमूत्र शरीर में व्याप्त विष को नष्ट करता है। शरीर में सफेद रक्त कोशिकाओं की वृद्धि कर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

वैज्ञानिकों का मानना हैं कि गौमूत्र से हाईड्रोजन सबसे शुद्ध रूप में प्राप्त हो सकती है जो कि भविष्य का ईधन है और बिना प्रदूषण के जलता है। इसी के साथ वे यह भी स्वीकार करते है कि अगर विश्व को कोई ऐसा हाईड्रोजन दे सकता है तो वह भारत राष्ट्र की गाय ही है।

www.panchgavya.org

अमेरिकी वैज्ञानिक काकोड हेमिल्टन ने आधुनिक विज्ञान को यह सिद्ध कर दिया है कि गौमूत्र के उपयोग से हृदय रोग को ठीक किया जा सकता है।

डॉ. सीमर्स ने गौमूत्र से रक्त बहने वाली नाड़ियों को नुकसानदायक कीटाणुओं से मुक्त करने का दावा किया है।

गौमूत्र में ताम्र होता है जो मानव शरीर में स्वर्ण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। गौमूत्र कीटनाशक होने से वातावरण को शुद्ध करता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। गौमूत्र त्रिदोष नाशक है।

गोमूत्र के तत्व

- यूरिक
- यूरिक एसिड
- हिस्यूरिक एसिड
- सोडियम क्लोराईड
- फॉस्फेट
- नाईट्रोजन
- सल्फर
- अमोनिया
- तांबा
- लोहा
- सोडियम
- पोटेशियम
- मेंगनीज
- कार्बोलिक एसिड
- केल्शियम
- विटामिन
- लेक्टोज
- एंजाइम्स
- जल
- क्रिएटीनीन
- और हाईड्रोक्लोराईड
- अन्य लवण

© पंचगव्य गुरुकुलम्

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

मुद्रक : कलाकृति जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 117 वर्ष 2016

वैदिक गऊमाँ एवं आधुनिक गाय

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

E-mail : gomaata@gmail.com
Website : www.panchgavya.org
www.facebook.com/maharisivagbhatta

अ.ब. राजीव भाई दीक्षित

वैदिक काल के गऊमाँ के चित्र में 33 कोटी देव हैं। इसका अर्थ है कि गऊमाँ के शरीर में 33 वास्तविक देव हैं। उन वास्तविक देवों को गऊमाँ के शरीर में उन्हीं स्थानों पर स्थापित किया गया है जिन - जिन अंगों में उन देवों के वास हैं। इस विषय को समझने की दृष्टि से देवों के चित्र के स्थान पर आधुनिक गऊमाँ के शरीर में उन्हीं देवों के आण्विक संरचना को दर्शाया गया है। जिसे देखकर इस विषय को आसानी के साथ समझा जा सकता है। जहां - जहां पर जिन - जिन आण्विक संरचना के चित्र दर्शाये गए हैं वहां -वहां उन तत्वों का वास / निर्माण गऊमाँ के शरीर में होता है। ये सारे तत्व मनुष्य के शरीर में भी पाए जाते हैं। इसीलिए गऊमाँ के सभी गव्य अपने आप में अमृत हैं।

मुद्रक : कलाकृति, जयपुर, 9829055961

चित्र संख्या 113 वर्ष 2015

क्षीर मंथन; सृष्टि की सबसे बड़ी खोज

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम, तमिलनाडु

E-mail : gomaata@gmail.com • Website : www.panchgavya.org

www.facebook.com/maharisivagbhatta

सृष्टि की सबसे बडी खोज

क्षीर सागर-मेरु पर्वत और दानव-देवताओं द्वारा प्रसिद्ध घटना कथा जो भारत के प्रत्येक घरों में ब्रह्म मुहूर्त के दौरान घटित होती रही है अर्थात् गोमाता के दूध से बना दही और उसमें मंथन की प्रक्रिया से निकला हुआ मक्खन व उससे निर्मित घृत यह सृष्टि की सबसे बड़ी खोज है। इसी खोज की प्रेरणा से ही "बीग बैंग थ्योरी" निकाली गई और बतलाया गया कि सृष्टि के निर्माण में लगे हुए सुक्ष्म कण ही विष्णु ऊर्जा और शिव ऊर्जा हैं। इन दोनों ऊर्जाओं के सम्मलित रहने के लिए एक ब्रह्म ऊर्जा भी है जो अदृश्य है। इस अदृश्य ऊर्जा में प्रज्ञा रूपी चेतना है। सृष्टि में इस ऊर्जा की अधिकता केवल देशी गाय के दूध से वैदिक प्रक्रियाओं द्वारा निकाले गए मक्खन में ही है। इसलिए मक्खन रूपी गव्य ही इस सृष्टि में साक्षात् ब्रह्म ऊर्जा है। जिसे ग्रहण कर जीव जगत बुद्धिशाली, बलशाली और सृष्टि को संतुलित रखे, ऐसा चित्त प्रवृति वाला होता है।

भारत का भविष्य

जब भारत के बच्चों को दोबारा मक्खन रूपी ब्रह्म ऊर्जा और गोमाता का सानिध्य प्राप्त होगा तभी इस धरती पर फिर से ऋषि और वीर पुरुष पैदा होंगे। अतः किसी भी कीमत पर यह कार्य करें। तभी हम भारत को विदेशी कम्पनियों की लूट से मुक्त कराकर स्वदेशी और स्वावलंबी भारत बना सकते हैं।

अ.ब. राजीव भाई दीक्षित

www.panchgavya.org

पंचगव्य गुरुकुलम्

चित्र संख्या 112 वर्ष 2015